भँवरा और हाथी

बाबा मुक्तानन्द द्वारा सुनाई गई कहानी पर आधारित

एक समय की बात है, एक भँवरा था — युवा, हट्टा-कट्टा, फुर्तीला। फूलों के मीठे-मीठे रस की खोज में दिनभर फूलों पर मँडराता रहता। कभी इस फूल पर तो कभी उस फूल पर। बड़ा आनन्द आता उसे इसमें। दुनिया में तरह-तरह के फूल हैं और सभी का अपना अलग-अलग आकर्षण है। भँवरा जब फूलों की पंखुड़ियों पर बैठता तो उसके पैरों को उनका कोमल स्पर्श उसे बहुत अच्छा लगता; वह हर खिले फूल पर बैठकर उसमें छिपे मधु का रसपान करता। एक फूल से दूसरे पर मँडराते हुए वह गुनगुनाता, "गुन-गुन, गुन-गुन, देखूँ तो, इस फूल का स्वाद कैसा है?" एक फूल पर बैठने की देर न होती कि दूसरा फूल उसे आकर्षित कर लेता। कभी-कभी तो वह मधुपान के सुख में इतना रम जाता कि उसे समय का भान ही न रहता।

एक दिन, उड़ते-उड़ते भँवरा बड़ी दूर चला गया और एक कमल-सरोवर पर आ पहुँचा जो सुन्दर कमल-पुष्पों से भरा हुआ था। मध्याह्न के सूर्य के प्रकाश में पूरे खिले हुए कमलों का सौन्दर्य देखने लायक था। कमल के फूल तो भँवरे को बहुत ही पसन्द थे। वह एक कमल पर बैठा और उसका रसपान करने लगा; फिर दूसरे कमल पर पहुँचा, और फिर तीसरे पर। उसने जी भरकर रसपान किया। इतना अधिक रस पी लेने के कारण नींद से उसकी आँखें बन्द होने लगीं।

भँवरे को भान था कि अब घर पर लौटने का समय हो गया है, पर उसने अपने आप से कहा, "बस, एक घूँट और। उसके बाद जल्दी ही घर की ओर लौट चलूँगा। पर उसके पहले बस, एक और फूल पर बैठ लूँ।"

उसी समय, वहाँ किनारे पर लगे पेड़ों के बीच एक ज्ञानी, दयालु ऋषि खड़े, सरोवर के जल पर खेलतीं, अस्त होते हुए सूर्य की किरणों को निहार रहे थे। तभी उनकी दृष्टि कमल-पुष्पों के बीच धीरे-धीरे रेंगते हुए भँवरे पर पड़ी।

उन्होंने मृदुल स्वर में कहा, "अरे, नन्हें भँवरें, समय बीता जा रहा है, दिन ढलने को है। सन्ध्या होने वाली है। तुम्हें घर नहीं जाना है क्या?"

“आप ठीक कह रहे हैं, ऋषिवर,” भँवरे ने कहा। कुछ क्षण बीत गए, पर भँवरा जाने का नाम ही नहीं ले रहा था। कमल का फूल था भी तो कितना कोमल, कितना नरम-मुलायम; उसका रस भी कितना मीठा था — भँवरा उसे छोड़ ही नहीं पा रहा था। “मुझे जाना चाहिए,” वह बुदबुदाया। “बस पलभर में चल दूँगा,” उसने अपने आप से वादा किया। पर कहाँ, चलने के बजाय उसने मधुरस का एक घूँट और भर लिया!

जल्दी ही, सूर्य का प्रकाश मन्द हो गया और सन्ध्या की शीतलता छाने लगी। सरोवर के सारे कमल मुड़कर बन्द होने लगे. . . रात भर के लिए। भँवरा अब भी एक कमल के बीच मस्त बैठा हुआ था और ऋषि की दृष्टि उसी कमल की पंखुड़ियों पर टिकी हुई थी, जो आहिस्ता-आहिस्ता भँवरे के चारों ओर बड़ी सहजता से बन्द होती जा रही थीं। सूर्य क्षितिज के नीचे पहुँच गया और दिन का उजाला क्षीण हो गया। कोई सोच भी नहीं सकता था कि उनमें से किसी एक कमल के भीतर कोई भँवरा हो सकता है।

भँवरा, अपने आप को इस तरह बन्द कमल के अन्दर सुरक्षित पाकर निश्चिन्त था। उसने अपने आप से कहा, “चिन्ता किस बात की? रात जल्दी ही बीत जाएगी। दिन होगा और जब सूर्य की किरणें इस कमल को स्पर्श करेंगी तो इसकी पंखुड़ियाँ फिर से खुल जाएँगी। तब मैं आज़ाद होकर उड़ जाऊँगा और इस सारे मधुरस को अपने साथ घर ले जाऊँगा। और कल तो मैं अपने सभी साथी भँवरों को भी इन कमलों के अमृत जैसे मीठे-मीठे रस पर दावत उड़ाने के लिए लेकर आऊँगा।”

परन्तु, भँवरा बोलने में कुछ जल्दी कर गया। उसी रात एक हाथी का बच्चा अँधेरे जंगल में घूमता-फिरता हुआ वहाँ आया। वह अपनी सूँड़ को इधर-उधर हिलाते-डुलाते, पेड़ों की डालियों को तोड़ते और सूखी पत्तियों को अपने पैरों तले रौंदते हुए मस्ती में चला आ रहा था। वह सरोवर के किनारे पहुँचा तो उसे धुँधले-से शान्त जल में वे रसभरे कमल दिखाई दिए। उसे भी कमल उतने ही प्रिय थे जितने कि भँवरे को। वह जल में उतर गया और कमल के फूलों को निगलने लगा।

कमल के अन्दर सुरक्षित बैठा भँवरा भयभीत हो उठा और ज़ोर-से गुंजार करने लगा। हाथी के जबड़े के बन्द होते ही उसे समझ में आ गया कि अब वह कभी वापस अपने घर नहीं पहुँच पाएगा, न ही अपने साथी भँवरों को कभी इन कमल-पुष्पों के मधुर रस पर दावत उड़ाने के लिए ला पाएगा। उसके जीवन का अन्त आ पहुँचा था।

अगली सुबह, सरोवर पर सब कुछ बिलकुल शान्त था। उन दयालु ऋषि को रात में कुछ शोर सुनाई दिया था, अतः वे फिर से जंगल में गए। सरोवर के किनारे पहुँचकर उन्हें उस क्षण का स्मरण हो आया

जब उन्होंने देखा था कि कमल पर बैठे-बैठे ही भँवरे की आँख लग गई थी। अतः उन्होंने अनुमान लगा लिया कि वहाँ क्या घटा होगा। उन्होंने अपना सिर झुकाकर अपने हृदय को स्पर्श किया।

उन्होंने कहा, "अभागे नन्हें भँवरे, तुम्हें मेरा आशीर्वाद! तुम सुख से सम्मोहित हो गए और तुमने घर वापसी की यात्रा में देर कर दी। तुम्हें कमल इतना मनोहारी लगा, उसकी सुगन्ध इतनी मोहक लगी, उसका मधु ऐसा स्वादिष्ट लगा कि समय के बारे में बिलकुल ही भूल गए जो हमारे दिनों को उसी प्रकार निगल जाता है जैसे हाथी ने कमल के फूलों को निगल लिया। तुम्हारे जीवन और मरण, दोनों में हमारे लिए एक सीख निहित है : सत्य को जानने हेतु प्रयत्न करने का समय अभी ही है।"

जैकलिन मर्फ़ी द्वारा पुनःकथित
एन्जेला स्टीर द्वारा चित्रित

© २०१८ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।